अष्टम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

संसार में प्राचीन काल से ही पर्यटकों का उल्लेख मिलता है। आदिम मानव जहाँ अपने भोजन वस्त्र और आवास के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आया-जाया करता था, वहीं परवर्ती युग के मानव ने यायावरी के द्वारा नये देशों, द्वीपों, मानव समुदायों आदि की खोज की है। भारत में विशेष रूप से मध्यकाल तक में तीर्थ यात्राओं पर लोग निकला करते थे। आवागमन के साधनों के अभाव में भी धर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले भारत के विभिन्न तीर्थ स्थलों के दर्शनार्थ पैदल यात्रा करते थे । आधुनिक युग के महत्वपूर्ण तीर्थयात्री स्वामीविवेकानन्द ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा शिकागों में सम्पन्न विश्व धर्म सम्मेलन में की । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पर्यटन से मानव जाति एक दूसरे के निकट आयी है तथा एक दूसरे की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, धर्म एंव सामाजिक परिस्थितियों को समझने में सफल हुई है। विश्व के प्रसिद्ध यात्रियों में ह्वेन सांग , फाहियान, मार्कोपोलो , अलमसूदी, अलबरूनी, इब्नबतूता, कोलम्बस, वास्कोडिगामा आदि ने यात्रा के माध्यम से विभिन्न देशों एंव द्वीपों की जानकारी सारी दुनिया को प्रदान की।

इसी श्रृंखला में हिन्दी यात्रा साहित्य के पुरोधा पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने विश्व के कई महत्वपूर्ण देशों की यात्रा एकाधिक बार की एवं उन देशों की भाषा संस्कृति , सभ्यता , सामाजिक स्थिति , राजनीतिक स्थिति , आर्थिक स्थिति का विषद वर्णन अपने यात्रा साहित्य में प्रस्तुत किया है। उनकी तिब्बत यात्रा बहुउद्देशीय थी। वहाँ पहुंच कर उन्होंने भाषा और साहित्य के गुहा अंधकारों को प्रकाशित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के बहुत सारे एंव महत्वपूर्ण ग्रन्थ भारत से विलुप्त हो चुके हैं। उन ग्रन्थों की खोज राहुल जी ने तिब्बत के मठों, बिहारों, गोम्पाओं से अथक परिश्रम करने के उपरान्त की है । उन्नके अपने जीवन का© प्रतिपाद्य 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' था। घुमक्कड़ शास्त्र के रचयिता राहुल जी ने घुमक्कड़ी को सर्वश्रेष्ठ कार्य और घुमक्कड़ को विश्व की श्रेष्ठतम विभूति बताया है। घुमक्कड़ी के बलपर ही राहुल जी ने लुप्तप्राय भारतीय ग्रन्थों की खोज तिब्बत में की तथाउसबहुमूल्य निधि को अपने साथ लाए जो पटना संग्रहालय में सुरक्षित है।

राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य हिन्दी जगत में महत्वपूर्ण एंव बहुमूल्य स्थान रखता है। क्योंकि जहाँ एक ओर राहुल जी ने विभिन्न देशों की यात्रा के क्रम में विभिन्न देशों की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है वहीं जहाँ कहीं जो कुछ साहित्य या पुरातत्व से संबधित सामग्री मिली उसका या तो वर्णन किया है अथवा उसका

संग्रह किया है ।

राहुल जी को घुमक्कड़ बनाने में जहाँ एक ओर उनके नाना रामशरण पाठक एंव इस्माइल के शेर "सैर कर दुनियां की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहाँ, जिन्दगानी गर रही तो, नौजवानी फिर कहाँ " से प्रेरणा मिली वहीं दूसरी ओर बाल्यावस्था में रामदुलारी देवी के साथ उनके विवाह ने उन्हें घर छोड़ने के लिए उन्हें बाध्य किया–

"उस वक्त ग्यारह वर्ष की अवस्था में मेरे लिए यह 'तमाशा' था । चार साल बाद ही जब मेरी उम्र 15 वर्ष हुई तभी मैं इस 'तमाशे' को शक की नजर से देखने लग गया था । 1909 ई. में अर्थात एक साल बाद ही से मैंने इस बंधन से निकल भागने के लिए घर को छोड़ देने का संकल्प और प्रयत्न शुरू किया ।" (मेरी जीवन यात्रा भाग–1)

इस प्रकार राहुल जी का सम्पूर्ण जीवन एक घुमक्कड़ या यायावर के रूप में व्यतीत हुआ । देश–विदेश की यात्रा करते हुए विभिन्न संस्कृतियों और विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करना उनके जीवन का ध्येय बन गया था । अदम्य साहस , उत्साह और जिज्ञासावृत्ति ने उन्हें तिब्बत की दुर्गम घाटियों, उतुंग शिखरों, घने जंगलों, दुर्गम खाईयों एंव ऊबड़–खाबड़ पकडंडियों पर चलने की प्रेरणा दी । इस प्रकार इस अदम्य साहसी यायावर ने किन्नर देश, तिब्बत, चीन, अमेरिका, रूस, लंका, ईरान, मंगोलिया आदि देशों की यात्रा की । यात्रा के दौरान वे विभिन्न स्थानों के विहारों, मठों, ध्वंसावशेषों, मंदिरों में प्राचीन धरोहरों का अनुसंधान करते रहें । राहुल जी ने अपने यात्रा–वृतान्तों में एक व्यापक चित्रपट पर मानव एंव प्रकृति का वर्णन प्रस्तुत किया है ।

मानव जाति के सामाजिक जीवन, रीति–रिवाज, पूजा–पाठ, अंधविश्वास आदि का वर्णन करने के साथ ही साथ उसकी आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन करने में राहुल जी पीछे नहीं हैं । जहाँ कहीं उन्होंने यह देखा कि अंधविश्वास या वाह्य आडंबर के कारण समाज की हानि हो रही है उसकी उन्होंने कटु आलोचना की है ।

राहुल जी ने अपने यात्रावृत्तों में प्रकृति का वर्णन करने में काफी रुचि ली है । किन्नर देश की यात्रा करते समय उन्हें विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे मिले थे उनका वर्णन उन्होंने विस्तार से किया है तथा उसकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला है । वे जिस देश में गये वहाँ की भौगोलिक एंव प्राकृतिक स्थिति का वर्णन करने में पीछे नहीं रहे ।

विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए उन्होंने प्रशासनिक व्यवस्था, राजनीतिक परिस्थिति का वर्णन भी किया है । साम्यवादी देश रूस की व्यवस्था से वे बहुत अधिक प्रभावित थे । जिसका वर्णन उन्होंने अनेक स्थानों पर किया है

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि राहुल जी का यात्रा साहित्य हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि है । उन्होंने घुमक्कड़ शास्त्र की रचना करके पर्यटकों के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य किया ।